उदयपुर के दरबारी कला में "प्रकृति" चित्रण

डॉ० मनीष कुमार जायसवाल*

मेवाड़ की राजधानी उदयपुर अपनी प्रकृति, सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। यह नगरी मनोरम् दृश्यों एवं झीलों के कारण विश्वविख्यात है। इन झीलों के अतिरिक्त यहाँ चारों ओर के प्राकृतिक वातावरण, पहाड़ियाँ भव्य राज प्रसाद इसकी शोभा को और बढ़ावा देतें हैं।

प्राकृतिक चित्रण मुख्य रूप से पश्चिमी कलाकारों की देन है, पाश्चात्य कलाकारों ने स्वतन्त्र रूप से प्राकृतिक चित्रण (लैण्ड स्केप) ऑयल कलर में तैयार किया। वहीं भारतीय कला में प्रकृति चित्रण स्वतन्त्र रूप से न बनकर यहाँ कि दरबारी कला की मुख्य आकृतियों के साथ प्रकृति चित्रण को स्थान दिया। भारतीय कलाकारों ने इन्हीं कलाकृतियों के द्वारा अपनी जीवन्त शैली को प्रदर्शित करने का माध्यम बनाया।

उदयपुर की कला में यहाँ की झीलों के मध्य और किनारे बने जल महलों तथा दुर्गम महलों के कारण अपनी सुन्दरता के लिए जानी जाती है। यहाँ के चित्र वास्तव में दुलर्भ है। जो मेवाड़ के दरबारी चित्रों का अद्वितीय उदाहरण है।

ये चित्र महाराणों के व्यक्तिगत जीवन के चित्र, जुलूस चित्र, उत्सव चित्र, शिकार के चित्र, दरबारी घटनाओं के चित्र प्राकृतिक प्रभाव से ओत प्रोत है जो इन चित्रों की शोभा में चार चाँद लगाते हैं।

उदयपुर की प्रकृति मानवीय सौन्दर्य दृष्टि एवं कलाओं का विकास प्रकृति के अनुसार ही वातावरण को चित्रित किया जाता है। प्लेटो ने कला को सत्य की अनुकृति कहां है। जिसमें उसका भाव यह था कि सत्य ईश्वर है प्रकृति उसकी अनुकृति है और कला इसी प्रकृति की नकल है प्रकृति अन्नत रहस्यों से परिपूर्ण है।

प्रकृति और कलाओं का बड़ा ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। प्रकृति के अध्ययन से कलाकारों ने बहुत कुछ सीखा है इसमें फाण्टेबुल नामक चित्रकार का कथन है कि हम दुसरे की कृलाकृतियों के अध्ययन से केवल अनुकृति और समन्वय सीखते हैं ऐसी अवस्था में हम जिन आकृतियों का निर्माण करते है कोई नवीनता या मौलिकता नहीं होती, किन्तु प्रकृति के अध्ययन से हम मौलिक शैली का सृजन करने में समर्थ होते हैं।

उदयपुर की कला में प्रकृति का प्रयोग कई प्रकार से किया जा सकता है।

1. सिद्धान्त ग्रहण।
2. आदर्श ग्रहण।
3. शुद्ध दृश्य ग्रहण।
4. पृष्ठ भूमि।

* प्रवक्ता–चित्रकला, एस०डी०इण्टर कॉलेज, सहारनपुर–247001 (उ०प्र०)।

सिद्धान्त ग्रहण

कलाकार मनोरम प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन करके उनके रहस्यों को जानने की कोशिश करता है और उसी के आधार पर प्रकृति चित्रण एवं कलाकृतियों की रचना करता है तथा चित्र में लय दिखाने का प्रयत्न करता है।

आदर्श ग्रहण

भारतीय कलाकारों ने शरीर के अंगों की उपमाएँ प्रकृति के विभिन्न उपादानों से की सौंदर्य इन उपमाओं को प्रकृति में खोजकर यहॉ के कलाकारों ने प्रकृति के चित्रों में चारों ओर व्यक्त करने की चेष्ठा की है। कलाकारों ने मानव की विशाल पद्धति का ही एक अंग माना है और इसी संदर्भ में प्रकृति तथा मानव को चित्रित किया है।

शुद्ध दृश्य चित्र

जब कलाकार प्रकृति के किसी स्वरूप पर मुग्ध होता है तो उसकी स्मृति हमेशा बनाये रखने के लिए उसका अंकन करता है किन्तु उसकी प्रत्येक बारीकी का अध्ययन नहीं करता केवल उन्हीं अंशों को चित्रित करता है जो उसे आकृर्षित करता है चीनी चित्रकला में दृश्य चित्रण की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है।

पृष्ठभूमि

घटनाओं तथा आकृतियों को प्रस्तुत करते समय कलाकार शोभा के चित्रण में अनुकूल वातावरण का प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए पहाड़ी शैली के चित्रकारों ने प्रेम विषयक चित्रों में पुष्पित और पल्लवित लताएं दिखाई हैं विरहता के चित्रण अथवा दुर्ग की पृष्ठभूमि प्रभावशाली हो सकते हैं।

रहस्यवादी कलाकार प्रकृति में परमतत्वों का दर्शन करता है जिसके कारण प्रकृति का प्रेम भाव स्थापित हो सकता है।

भारतीय पौराणिक ग्रन्थ विष्णु धर्मोत्तर पुराण में भी प्राकृतिक विषयों के चित्रण के सम्बन्ध में उल्लेख भी मिलता है उनके अनुसार नदियों को स्त्री के रूप मे, मगरमच्छ, कछुआ, मछली, संयुक्त आकाश को रंगीन और पक्षी जंगल में डाल पर पहाड़ी चट्टानें आदि दिखानी चाहिए, नगर दृश्य चित्रण में सुन्दर मन्दिर, मकान, गाँव में झोपड़ियां आदि दिखाने चाहिए। राजस्थानी चित्रों में प्रकृति को मानव की सहचरी के रूप में दिखाया गया है। इसमें नदी, पर्वत, पशु–पक्षी सबको विषयानुरूप दिखाया गया है। यहाँ के चित्रकारों ने प्रकृति को मानव के भावानुकूल चित्रिक किया है तथा महाराणाओं के चित्रण के साथ प्रकृति को सौन्दर्य और राजसी वैभव के साथ चित्रित किया है। विभिन्न प्रकार के शिकार चित्रों में इन चित्रकारों ने ऊँचे पहाड़ तथा ऊपर उगे हुए छोटे–छोटे वृक्ष चित्रित किये है साथ ही इन पहाड़ों को मेवाड़ के रेतिले वातावरण के अनुकूल अधिकतर नारंगी भूरे रंग से अथवा काले रंग से चित्रित किया है।

प्रकृति का सन्तुलन मेवाड़ शैली की विशेषता है। प्रकृति को अलंकारिक रंगों से चित्रित किया गया है। गहरी पृष्ठभूमि में पत्तियों को हल्के हरे, पीले और सफेद रंगों से बनाया गया है। पर्वत और चट्टानों के चित्रण में मुगल प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई

पड़ता है। जहाँ कहीं भी जल का चित्रण किया गया है। उसमें प्रवाह दिखाने के लिए लहरदार रेखाओं का प्रयोग किया गया है। यहाँ के कलाकारों में वास्तविक दृश्य बनाने में विशेष रूचि दिखाई है।

संदर्भिका

1. असगर कादिर – भारतीय कलाएँ
2. गिर्राज किशोर अग्रवाल – कला समीक्षा
3. वाचस्पति गैरोला – भारतीय चित्रकला
4. आनन्द मुल्कराज – इण्डियन पेंटिंग, बुक ट्रस्ट, दिल्ली
5. डॉ० मोती चन्द – मेवाड़ पेंटिंग, दि टाईम्स ऑफ इण्डिया एलब्म
6. ए०के० हल्दर – अवर हेरिटेज इन आर्ट